National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 161-164
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

यू. हरिकृष्ण आचार
सहायक अध्यापक,
दयानंदा सागर बिजनेस अकादामी,
उदयपुरा, कनकपूरा मैन रोड,
बेंगलूर.560082.

Correspondence:
यू. हरिकृष्ण आचार
सहायक अध्यापक,
दयानंदा सागर बिजनेस अकादामी,
उदयपुरा, कनकपूरा मैन रोड,
बेंगलूर.560082.

भारतीय समाज पर भूमंडलिकरण का प्रभाव

यू. हरिकृष्ण आचार

शोध सार :

भूमंडलीकरण (*Globalization*) 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उभरी वह वैश्विक प्रक्रिया है, जिसने आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर विश्व को परस्पर जोड़ने का कार्य किया। भारत में 1991 की नई आर्थिक नीति के बाद भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने तीव्र गति प्राप्त की। इस लेख का उद्देश्य भारतीय समाज पर भूमंडलीकरण के बहुआयामी प्रभावों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में आर्थिक उदारीकरण, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक परिवर्तन, शिक्षा और मीडिया, तकनीकी विकास, ग्रामीण-शहरी विभाजन, पारिवारिक संरचना तथा सामाजिक मूल्यों में आए बदलावों का विवेचन किया गया है। भूमंडलीकरण ने एक ओर आर्थिक अवसरों, सूचना-प्रौद्योगिकी के विकास, रोजगार सृजन और जीवन-स्तर में वृद्धि की संभावनाएँ उत्पन्न कीं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक अपसंस्कृति, पारंपरिक मूल्यों के क्षरण तथा पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियाँ भी प्रस्तुत कीं। यह शोध आलेख इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि भूमंडलीकरण भारतीय समाज के लिए न तो पूर्णतः लाभकारी है और न ही पूर्णतः हानिकारक; बल्कि इसकी प्रक्रिया संतुलित नीतियों और सांस्कृतिक सजगता के साथ ही समाज के समग्र विकास में सहायक हो सकती है।

2. बीज शब्द *:*

भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, भारतीय समाज, सांस्कृतिक परिवर्तन, उपभोक्तावाद, सूचना-प्रौद्योगिकी, सामाजिक असमानता, पारिवारिक संरचना, मीडिया प्रभाव।

मूल आलेख *:*

अंग्रेजी शब्द ग्लोबलइजेशन के लिए हिंदी में भूमंडलिकरण शब्द प्रचलित है। भूमंडलीकरण का अर्थ आर्थिक प्रयोजन के लिए राष्ट्रीय सीमाओं का विलोपन करने से है। अर्थात् राष्ट्रीय संस्कृति को नष्ट करना। इस का मूल उद्देश्य दुनिया को एकांत्रित कर व्यापार को विस्तार करना है। इस घोष व्याक्य है 'एक जन हिताय एक जन सुखाय' यह शब्द बीसवीं सदी के अंतिम दशक में व्यापक रुप से प्रयोग में आया। भूमंडलिकरण सिर्फ व्यापार के उद्देश्य पूरे दुनिया को जोडना चाहती है। इस में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है, विश्व भर में अपने चीजों को बेचकर पैसा कमाना बहुराष्ट्रीय कंपनियों का उद्देश्य है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों का केंद्र स्थान अमेरिका है।कार्ल मार्क्स पूँजीवाद पर बात करते हुए लिखते हैं कि-"पूँजी सिर से पैर तक के एक-एक बूँद खून को चूसकर एकत्रित होती है और मजदूर जितनी ही अधिक संपत्ति की रचना करता है, वह उतना ही अधिक मूल्य हीन बन जाता है और उसकी बनाई हुई चीज जितनी ही सुंदर होती है बनाने वाला उतना ही कुरूप बन जाता है।" भूमंडलिकरण पर विचार करते हुए प्रो.अमरनाथ लिखते है कि-"वैश्वीकरण के बहाने हमारी उदात्त सांस्कृतिक विविधता की विरास को खत्म करने की साजिश अमेरिकी साम्राज्यवाद कर रहा है।

हमारी भाषाओं, हमारी जीवन पद्धति और खान पर भी सीधा और बुरा असर पड़ना शुरू हो चुका है । इन प्रभावों के कारण पूरा का पूरा संवेदनशील प्रभुद्ध समाज बेबस और बेचैन है । अपराधों में वृद्धि, मनोरंजन के व्यापर में शो बिजिनेस के साथ-साथ मुक्त यौनाचार, उद्दाम संगीत और अश्लील साहित्य का हमारे यहाँ भी उद्योग बन चुका है। पूरी जीवन शैली का अमेरिकीकरण हो चुका है। दूर दराज के उन क्षेत्रों में जहाँ लोगों को पेय जल या सड़कें व अन्य मौलिक सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं । टी.वी की पहुँच के कारण लोग काल्पनिक दुनिया वा यथार्थ में फर्क करने भूल चुके है । वैश्वीकरण के लाभों का यशोगान करनेवालों के लिए आर्थिक असमानताओं या सामाजिक न्याय की मुद्दों की चर्चा फैशन के बाहर की वस्तु हो चुकी है।"[1]प्रभा खेतान भी भूमंडलिकरण पर विचार करते हुए तीन मुख्य लक्षणों को सामने लाते हैं "मोटे तौर पर भूमंडलिकरण के तीन मुख्य प्रभाव सामने आए हैं ।

1. पिछली शताब्दी की पुरानी आस्थाओं का एक दम से लडख़डाना और निस्तेज होना।
2. एक वैश्विक दृष्टिकोण के साथ भूमंडलीय संस्कृति का जन्म।
3. वर्ग,राष्ट्रीयता और जातीयता पर उठने वाला विवाद।[2]

भूमंडलिकरण का जन्म एक वैश्विक दृष्टिकोण के साथ हुआ है, भूमंडलिकृत समाज का प्रमुख लक्षण यह है कि निरंतर चुनाव करने के लिए विवश करता है । हर क्षेत्र में पुरूष हो या स्त्री अपने को क्या चाहिए इसका चुनाव खुद तैय कर रहे हैं । आज के समाज में सभी अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं । भूमंडलीकरण में विज्ञापन का प्रभाव दिखाई पडता है बाजार में जो भी नई चीज बिकते हैं इस के पीछे विज्ञापन का असर ज्यादा है । क्योंकि आज हम उपभोक्ता जनित वस्तुओं को जीवन शैली में उपभोग कर रहे हैं । व्यक्ति चाहे प्रयोग धर्म जीवन अपनाए या बाजार में शाश्वत खरीद्दारी गुण अपनाए, नहीं तो वह अपनी प्राचीन विरासत के कोह में ही रह जाएगा। भूमंडलिकरण समाज का देन है कि यहाँ परंपरा और सांस्कृतिक भिन्नतओं के बीच ही हमें किसी एक को चुनने के लिए मजबूर करता है ।

भूमंडलिकरण का प्रभाव विकसित देशों से अधिक विकासशील देशों में देखने को मिलता है क्योंकि विकसित देशों में भूंमडलीकरण से रोजगार कम होते जा रहे हैं, इस का सबसे बडा कारण मशीनिकरण । अर्थात् व्यक्ति के स्थान पर मशीन का प्रयोग। उपर्युक्त कारणों से यूरोप में बेरोजगारी की समस्या आम बात हो गई ।वैश्वीकरण के प्रभाव से भारतीय परंपरा और देशीय आचारण विघठन के कागार पर पहुँच गए हैं।

भूमंडलीकृत समाज में एक ओर परंपरा के अवषेश मिलते हैं तो दूसरी ओर आधुनिक दृष्टि कोण झलकता है । इन्हीं कारण वश भारतीय समाज का खुद नियती पर नियंत्रण खो गया है । आज मनुष्य बौद्धिक शून्यवाद, सामजिक पलायनवाद,संदेहवाद के तरफ आगे बढते जा रहा है। समाज में व्यक्ति के गुण से ज्यादा व्यक्ति के आर्थिक स्तिति को ज्यादा महत्व देते हैं ।

अमेरिकी मौलवादी ईसाइयत के अनुसार हम अंधेरे युग में आगए हैं जो पूरी मानवता को खत्म करने पर तुला है । हम इसाइयत को पीछे छोड आए हैं हमारे का समुंदर डूब रहे हैं हमें इस से निकलना होगा,यह उद्गार केवल अमेरिका के इसाइयों का नहीं दुनिया में जो भी भूमंडलीकरण के चपेट में आकर अपना समाज और संस्कृति को नष्ट होते देख रहे हैं उन सब मानवता वादियों का आवाज है । भारतीय समाज पर भूमंडलीकरण का बहुत बड़ा प्रभाव है । आज भारतीय बाजार में विदेशी जंक फुड का बहुत बड़ा असर हुआ है । आधुनिक विज्ञापन कौशलता से मैक डोनाल्ड, के.एफ.सी और पिज्जा हट जैसे विदेशी रेस्टरेंट हमारे खान-पान के संस्कृति को बदल दिया है

भारत में परंपरागत से रह रहे अविभक्त परिवार आज तीन चार लोगों का एकाकी परिवार बन गए हैं। घर में रहे बुजुर्ग लोगों को वृद्धाश्रम को भेज रहे हैं । अगले पीढी के बच्चों को नीतिपरख कहानी तथा लोरी सुनाने के लिए घर में कोइ बुजुर्ग नहीं रहेंगे । सकारात्मक दृष्टि से देखा जाए तो आधुनिक शिक्षा नीति ने भारत की परंपारिक दृष्टि कोण को बदल दिया है। वे इस सच्चाई को मानने लगे हैं कि आज लडकियाँ, लडकों से कम नहीं है। वैश्वीकरण दौर में देखा जाए तो भूमंडलीकरण हर क्षेत्र में इस का प्रभाव दिखाई पड़ता है । आज भारत के नवजवान सांप्रदायिक त्यौहार जैसे होली, दीवाली के जगह वेलैंटेन और फ्रेंडशिप डे मनाने में व्यस्थ हैं।

भूमंडलिकरण के बहाने भारत के उदात्त सांस्कृतिक विविधता की विरासत को खत्म करने की साजिश अमेरिकी साम्राज्यवाद कर रहा है। हमारी भाषा, संस्कृति और खान पान में इसका असर देखने को मिलता है । भूमंडलिकरण के प्रभाव से भारत में होने वाले दुश परिणामों पर विचार करते हुए प्रो.अमरनाथ लिखते हैं कि "बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कारोबार पूँजी की विकरालता के कारण राष्ट्रीय सीमाओं को तोडकर दुनिया में फैल रहा है वह फैल कर अपना खेल खेलने के लिए सारी परंपरागत सीमाओं, बंधनों, नियमों, कानूनों और मर्यादों को तोड़ रहा है।"[3]

भूमंडलीकरण के प्रभाव से हमारे देश में भी खुले बाजार व प्रतिस्पर्द्धा के लाभों का निरंतर चर्चा और महिमामंडित करने के प्रयास हो रहे हैं कि सारा मीडिया एक धून पर घूम रहा है । सरकार के व्यावसायिक गतिविधियों की पीठ पर अनपेक्षित रूप से जमी हुई है उसे हटा दो, सरकारी नौकरियों से बाहर कर दिया जाए । गरीबों को दी गई सरकारी छूटें और रियायते समाप्त की जाए । कल्याणकारी राज्य एक ढकोसला है । देश पर सब्सीडियों का बोझ कम करना,रूपयों का अवमूल्यन,बैंक के ब्याज-दर को घटाना ये सारी बडे व्यावसायिक हितों में हो रहा है ।

भारत में परंपरागत से रह रहे अविभक्त परिवार आज तीन चार लोगों का एकाकी परिवार बन गए हैं। आज घर के बुजुर्ग लोगों को वृद्धाश्रम भेज रहे हैं इससे अगले पीढी के बच्चों को नीति परख कहानी तथा लोरी सुनाने के लिए कोई बुजुर्ग नहीं रहेंगे । इस का परिणाम आने वाले पीड़ि पर पडेगा और जैसे-जैसे इनसान अपने मानवीय

मूल्य खोता जाएग। मैथिलीशरण गुप्त भारतीय परंपरा में होने वाले बदलाव पर चिंतन करते हुए उन्होंने कहा था कि-

"हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी,

आओ, विचारें आज मिलकर हम समस्याएँ सभी।"[4]

मैथिलीशरण गुप्तजी का यह वाक्या आज भी प्रासंगिक है। भूमंडलीकरण के प्रभाव से आज भारतीय समाज में निम्नलिखित परिवर्तन दिखने को मिलते हैं-

1. मानवीय मूल्यों का विघठन।
2. रिश्तों में दरार का परिणाम संयुक्त परिवार से एकल परिवार में परिवर्तन।
3. आस्थिकता से नास्थिकता की ओर।
4. संयुक्तवाद से वैयक्तिकतावाद की ओर।
5. अजनबीपन का आगमन
6. लौकिकवादी विचारधारा का आगमन
7. व्यक्ति में बढता हुआ हिंसा प्रवृत्ति
8. मनुष्य में बढता हुआ लालचीपन।
9. विदेशी वस्तुयों पर बढता हुआ मोह।
10. दिशा से भटकता हुआ युवा पीड़ि।

भूमंडलीकरण 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उभरी वह वैश्विक प्रक्रिया है, जिसने विश्व की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित किया। इसका मूल आशय देशों के बीच आर्थिक उदारीकरण, मुक्त व्यापार, पूँजी के प्रवाह, तकनीकी आदान-प्रदान और सांस्कृतिक संपर्क की वृद्धि से है। भारत में 1991 की नई आर्थिक नीति के लागू होने के बाद भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने तीव्र गति प्राप्त की। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व बाजार से जोड़ दिया। इसके परिणामस्वरूप विदेशी निवेश में वृद्धि हुई, बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन हुआ तथा उत्पादन और सेवा क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ी। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिली और विकास की संभावनाएँ विस्तृत हुईं।

आर्थिक क्षेत्र में भूमंडलीकरण ने भारतीय समाज को अनेक अवसर प्रदान किए। सूचना-प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, बैंकिंग और सेवा क्षेत्र में तीव्र प्रगति हुई, जिसके कारण भारत वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा। विशेषकर आईटी उद्योग ने भारत को विश्व मानचित्र पर स्थापित किया। रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए और एक सशक्त मध्यवर्ग का विकास हुआ। उपभोक्ताओं को वस्तुओं और सेवाओं के अधिक विकल्प प्राप्त हुए, जिससे जीवन-स्तर में सुधार आया। परंतु इसके साथ ही आर्थिक असमानता भी बढ़ी। शहरी क्षेत्रों में विकास तीव्र हुआ, जबकि ग्रामीण क्षेत्र अपेक्षाकृत पिछड़े रह गए। छोटे और कुटीर उद्योग बहुराष्ट्रीय कंपनियों की प्रतिस्पर्धा में संघर्ष करने लगे, जिससे पारंपरिक रोजगार प्रभावित हुए। कृषि क्षेत्र में वैश्विक बाजार की प्रतिस्पर्धा और लागत में वृद्धि के कारण किसानों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।[5]

सामाजिक स्तर पर भूमंडलीकरण ने भारतीय समाज की पारंपरिक संरचना में व्यापक परिवर्तन किए। संयुक्त परिवार प्रणाली का स्थान धीरे-धीरे एकल परिवार ने लेना प्रारंभ किया। शहरीकरण और रोजगार की बदलती परिस्थितियों ने पारिवारिक संबंधों की प्रकृति को प्रभावित किया। महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में भागीदारी बढ़ी, जिससे उनका सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण हुआ। वे अब केवल घरेलू भूमिका तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि विभिन्न पेशों में सक्रिय रूप से योगदान देने लगीं। हालांकि पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन के कारण पीढ़ियों के बीच वैचारिक अंतर भी बढ़ा है।

सांस्कृतिक दृष्टि से भूमंडलीकरण ने भारतीय समाज को एक ओर वैश्विक संस्कृति से जोड़ा, तो दूसरी ओर सांस्कृतिक अस्मिता के प्रश्न को भी जन्म दिया। भारतीय संगीत, योग, आयुर्वेद और बॉलीवुड का विश्व स्तर पर प्रसार हुआ, जिससे भारतीय संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली। इसके विपरीत पश्चिमी जीवन-शैली, फैशन, खान-पान और भाषा का प्रभाव भारतीय युवाओं में बढ़ता गया। अंग्रेज़ी भाषा का वर्चस्व बढ़ा और भारतीय भाषाओं के समक्ष चुनौती उत्पन्न हुई। उपभोक्तावादी संस्कृति ने सामाजिक मूल्यों को प्रभावित किया और भौतिक संपन्नता को सफलता का प्रतीक मानने की प्रवृत्ति विकसित हुई।

शिक्षा और मीडिया के क्षेत्र में भी भूमंडलीकरण का गहरा प्रभाव पड़ा है। उच्च शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण हुआ, विदेशी विश्वविद्यालयों से सहयोग और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से ज्ञान की पहुँच व्यापक हुई। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने संचार व्यवस्था में क्रांति ला दी। सूचना का प्रसार तीव्र हुआ और वैश्विक घटनाएँ तत्काल उपलब्ध होने लगीं। परंतु मीडिया के बढ़ते व्यावसायीकरण ने समाचार और मनोरंजन को बाज़ार-केन्द्रित बना दिया, जिससे सामाजिक सरोकारों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। तकनीकी विकास ने भारतीय समाज की जीवन-शैली को पूर्णतः बदल दिया। मोबाइल फोन, डिजिटल भुगतान प्रणाली, ई-कॉमर्स और ऑनलाइन सेवाओं ने दैनिक जीवन को सरल और तीव्र बनाया। "डिजिटल इंडिया" जैसी पहलें इस परिवर्तन का प्रमाण हैं। फिर भी तकनीकी निर्भरता ने मानवीय संबंधों में दूरी भी उत्पन्न की है। आभासी संपर्क के बढ़ने से प्रत्यक्ष संवाद में कमी आई है, जिससे सामाजिक संवेदनशीलता प्रभावित हुई है।

ग्रामीण और शहरी समाज के संदर्भ में भूमंडलीकरण का प्रभाव असमान रहा है। शहरी क्षेत्रों में उद्योग, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास तीव्र हुआ, जबकि कई ग्रामीण क्षेत्र अभी भी

मूलभूत सुविधाओं के लिए संघर्षरत हैं। ग्रामीण जनसंख्या का शहरों की ओर पलायन बढ़ा, जिससे महानगरों पर जनसंख्या का दबाव बढ़ा। यद्यपि संचार और परिवहन सुविधाओं के विस्तार से ग्रामीण क्षेत्रों में भी परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं, फिर भी क्षेत्रीय असमानता एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है।

राजनीतिक और नीतिगत स्तर पर भी भूमंडलीकरण ने भारतीय शासन-प्रणाली को प्रभावित किया है । विश्व व्यापार संगठन, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी संस्थाओं की नीतियों का प्रभाव भारतीय आर्थिक निर्णयों पर पड़ा है। पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और मानवाधिकार जैसे वैश्विक मूल्यों को भी बल मिला है । साथ ही, यह चिंता भी व्यक्त की जाती है कि वैश्विक आर्थिक दबाव राष्ट्रीय नीतियों की स्वायत्तता को सीमित कर सकते हैं।[6]

पर्यावरणीय दृष्टि से भूमंडलीकरण के परिणाम मिश्रित रहे हैं । औद्योगीकरण और उपभोग की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के अति-दोहन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं । दूसरी ओर, वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता और सहयोग की भावना भी बढ़ी है । अंतरराष्ट्रीय समझौते और सतत विकास की अवधारणा इस दिशा में सकारात्मक पहल हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो भूमंडलीकरण भारतीय समाज के लिए परिवर्तन की एक व्यापक प्रक्रिया है, जिसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है । यह प्रक्रिया अवसरों और चुनौतियों दोनों को साथ लेकर आई है । आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संतुलन को बनाए रखते हुए वैश्विक अवसरों का विवेकपूर्ण उपयोग करे । तभी भूमंडलीकरण भारतीय समाज के समग्र और न्यायसंगत विकास का माध्यम बन सकेगा।

उपसंहार :

अंततः यह कहा जा सकता है कि भूमंडलीकरण भारतीय समाज के लिए एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसने विकास और चुनौतियों दोनों को जन्म दिया है। इसने आर्थिक प्रगति, तकनीकी उन्नति और सामाजिक परिवर्तन के नए द्वार खोले हैं, परंतु साथ ही सांस्कृतिक असंतुलन, असमानता और पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं । आवश्यक है कि भारत संतुलित नीतियों, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम से भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को अपने विकास के अनुकूल बनाए। तभी यह प्रक्रिया भारतीय समाज को समृद्ध और सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध होगी। इन उपर्यक्त तथ्यों से झलकता है कि पूरे भारत वर्ष में भूमंडलीकरण का प्रभाव देखने को मिलता है और इससे मनुष्य के जीवन शैली में अनेक परिवर्तन हुए । यह परिवर्तन मनुष्य को दिन-ब-दिन बेचैन होने को मजबूर करता है । इसलिए भारतीय संस्कृति में भूमंडलीकरण का प्रवेश होने पर भी हमें हमारी संस्कृति, परंपरा और नैतिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए भविष्य की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. प्रो.अमरनाथ- हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली । पृ-374
2. प्रभा खेतान- भूमंडलीकरण ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र । पृ-9
3. प्रो.अमरनाथ- हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली । पृ-373
4. मैथिलीशरण गुप्त – भारत-भारती- साहित्य सदन चिरगाँव झाँसी संस्करण, 1984- पृ -2
5. राम आहूजा- भारतीय समाज। रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर: 2016 पृ-215–216
6. दीपांकर गुप्ता- भारत में सामाजिक परिवर्तन, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2012 पृ-102